

दित्यो न्यङ्गुष्मिभिः पर्यावर्तते ऽथ वर्षति धामच्छेदं खलु वै भूवा TS. 2,4,10,2; vgl. Nir. 7,24. धामच्छेदमिरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः VS. 18, 76. Kāṭh. 11,10. Āṇv. Çr. 2,13. — 2) dem Vashaikāra werden nach der Verschiedenheit seiner Wirkung drei Bezeichnungen gegeben: *Donnerkeil* (der die Feinde niederschlägt), *Dhāmakkhad* (d. i. das regenspendende, segnende Feuer), *der leere* (etwa der wirkungslose Blitzstrahl, blosses Wetterleuchten): त्रयो वै वषट्कारा वषट्कारा धामच्छेदः । यः समः संततो ऽनिरुणार्चः स धामच्छेदं प्रज्ञाय पञ्चवयानूपतिष्ठते Ait. Br. 3,7. — 3) Bez. des Verses VS. 18,76, welcher das Wort enthält, zugleich mit Anklang an die Hauptbedeutung: अनुष्ठुब्धधामच्छेदवति वाग्वा अनुष्ठुब्धधामच्छेदचैवास्य तदप्रोति यदस्य किं चनानात्म् Çat. Br. 10,1,3,10.

धामर्था (1. धामन् + धा) m. *Ordnungstifter* oder *Schöpfer*: अयदे विश्वं पवमान ते वशे बर्मिन्दो प्रथमो धामर्था अस्मि RV. 9,86,28.

1. धामन् (von 1. धा) 1) n. Uṅgval. zu Unādis. 4,150. = स्थान, जन्मन्, नामन् Nir. 9,28. = गृह, देह, बिष्, प्रभाव AK. 3,4,10,126. = गृह, देह, स्थान, जन्मन्, रश्मि. प्रभाव H. an. 2,270. MED. n. 80. = अगार H. 992. = रश्मि 99. a) *Wohnstätte, Heimath, Aufenthalt; Reich* (der Götter); im Bes. *die Stätte des heiligen Feuers und des Soma*: धामन्तस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्युः RV. 10,13,1. (Mitra-Varuṇa) ययोर्धाम धर्मणा रोचते बृहत् 68,5. 10,6. 7,61,4. अतर्मकी बृहती रोदसीमे विश्वा ते धाम वरुण प्रियाणि 87,2. प्रिया धामान्यादेतेरुपस्थे 10, 70,7. उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धाममस्तिरन् AV. 4,28,7. 7,68,1. धृते श्रितो धृतस्त्वस्य धामं RV. 2,3,11. प्रिया धामान्यमृता दधानः 3,53,10. विश्वा ते अग्रे त्रेधा त्रयाणि विश्वा ते धाम विभृता पुत्रा 10,43,2. 80,4. VS. 32,9. सप्त ते अग्रे समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि 17,79. सप्त धामानि परियन्मर्त्यो दशदाशुषे सुकृते नामरुस्व RV. 10, 122,3. त्रिंशद्वाम वि रजति 189,3. अग्निः प्रियेषु धामसु वि रजति VS. 12,117. 3,19. 15,52. 27,16. RV. 1,144,1. 2,3,2. — (सोम) या ते धामानि दिवि या पृथिव्या या पर्वतेष्वर्धोष्यु 1,91,4. पर्वस्व सोम दिव्येषु धामसु 9,86,22. 15. परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः 66,3. 2. 5. पवमान पर्वसे धाम गोनाम् 97,31. 5. 96,18. 19. 109,4. 114,1. 10,23,2. 8,12,32. 13,20. VS. 4,34. AV. 12,1,52. 4,13,3. SV. II,8,2,19,3. अस्मिन्धासि केन वः सपर्याम Taitt. Ān. 2,7,2. स वेदैतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं निहितं भाति शुभम् Mund. Up. 3,2,1. — कस्य धामोपयानि (Antwort): इमं भोमं नरकं ते पतति MBu. 1,3602. अव्यक्ता ऽतर इत्युक्तस्तमाहुः परमा गतिम् । यं प्राप्य न निवर्तते तद्धाम परमं नम ॥ Bhaḡ. 8,21. मध्यमं धाम विज्ञोः so v. a. der Luftraum Einschalt. nach Çāk. 78. त्रिभुवनपुरोः Megh. 34. सुधाशुभं धाम Bhartr. 1,40. व्रजतं च स्वकं धाम Kathās. 25,261. Rāḡa-Tar. 3,171. 172. Prab. 22,14. Buāg. P. 1,3,43. 4, 2,35. 8,18,32. Git. 5,5. Vop. 5,5. सिद्धं Vid. 283. देवी Rāḡa-Tar. 3, 407. मेरु adj. Beiw. Çiva's MBu. 13,1204. स्वधामानि ब्रह्मणि Buāg. P. 2,4,14. स्व एव धामव्रमाणमिधम 9,16. तदाङ्गतरं ब्रह्म सर्वकारणकारणम् । विज्ञोर्धाम परम् 3,11,41 (Burnouf an den beiden letzten Stellen: *essence*). ईश्वरस्य स्थूलं वपुः सकलजीवनिकायधाम 5,26,40. चेतः समाधीयताम् — स्वधामानि Bhartr. 3,40. स्फोताम्भोधर्ः Megh. 83,4. पुत्रं जनय सुश्रेणि धाम तत्रितयेजसाम् MBu. 1,4790. अयो धाम Buāg. P. 1,11,26. ईश्वरो धाममानिनाम् (Burn.: *de ceux qui tiennent à leur demeure*

corporelle) 3,11,28. धर्म Beiw. Çiva's Çiv. यद्गोधुरधाम (= पृथिवी) in einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,602, Çl. 3. नाम त्रिलोकमुखसंज्ञ-नैकधाम (Hall: *the sole resort*) ebend. 303, Çl. 8. Viell. hierher auch: त्वं धृतिमद्वाम दिव्यं विश्वेश्वरं भगवतं नमस्ये Hariv. 7418. — b) in den Opfersprüchen und Brāhmaṇa beinahe ausschliesslich in der — schon in älterer Zeit häufigen — Verbindung प्रियं धाम. α) *gewohnte Heimath, Lieblingsstätte*: यत्राश्विनोऽङ्गस्य कृषिः प्रिया धामानि VS. 21,46. उपाश्विनोः प्रियं धाम गच्छति जयति परमं लोकं य एवं वेद Ait. Br. 1,31. अयाम् 2,20. इन्द्रस्य 3,24. 5,2. Çāṇku. Ba. 22,4. — β) hieraus abgeleitet *Liebdingssache* überh., *Liebhabelei, Lust* (z. B. *Liebdingsspeise*. — *name*, — *person*): धाम नामासि प्रियं देवानाम् VS. 1,31. सेदे प्रियेण धामा प्रियं सद् आ सीद 2,6. देवानां प्रियं धाम भवति य एवं वेद AV. 15,2, 1. 6,1. ते देवा नुष्टास्तनूः प्रियाणि धामानि सार्धं समवददरे Çat. Br. 3,4, 2,5. आहुतयो वा अस्य प्रियं धाम 2,3,4,24. 13,2,1,2. एतद्वास्य प्रियं धाम यद्यविष्ठ इति 10,1,3,11. वैश्वानर इति वा अग्रेः प्रियं धाम Pāṇāy. Br. 14,2,3. Ait. Br. 3,8. 6,7. सोमं दिग्भिर्मिथुनेन प्रियेण धामा संस्पर्शयति Çat. Br. 3,9,4,20. TBr. 1,1,9,6. बर्हिषा प्रतीयाज्ञो वास्यं वा । एतैर्द्वि पशूनां प्रियं धाम । प्रियेणैवैनं धामा प्रत्येति 2,3,2,5. — c) (*Haus* so v. a. *Hausgenossenschaft*) *die Angehörigen*, überh. *zusammengehörige Truppe, Schaar*; auch pl.: अरं त इन्द्र कुन्ते सोमो भवतु वृत्रहन् । अरं धामभ्य इन्द्रवः RV. 8,81,24. 21,4. इन्द्रस्य धामे 25. 3,31,21. 6,2,9. 9,24,5. दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यंतम् 7,66,18. 60,3. 1,14,10. प्रियस्य मारुतस्य धामः 87,6. 83,11. गृणाय यो देव्यस्य धामस्तुर्विष्मान् 7, 38,1. 10,76,8. धामानि मर्त्यानाम् 8,90,6. यो धामानि वेद भुवनानि विश्वा 10,82,3. 9,86,5. धामान्यार्यो 63,14. पृथिव्याः सप्त धामभिः 1,22,4 (hierher viell. auch das u. a. aufgeführte Beispiel 10,122,3). परि धामान्यासामाशुः काष्ठांमिवासरन् AV. 2,14,6. *Geschlechter oder Familien der Kräuter* RV. 10,97,1. 2. — d) *Gesetz, Ordnung*: देवो देवानां न मिनामि धामं RV. 10,48,11. यः संमानं न प्रमिनति धामं 7,63,3. 6,21,3. प्र ये धामानि पूर्याण्यर्धान् 4,53,2. स धामं पूर्ये मेमे 8,41,10. प्रजापतेर्धामा AV. 10,5,6. Besonders α) *die von Mitra-Varuṇa ausgehende Ordnung*: प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धामं प्रिया मित्रस्य चेतता धुवाणि RV. 4,3,4. प्रिया धामं युवर्धता 6,67,9. 10,89,8. — β) *सुतस्य धाम*. सुतस्य योषा न मिनाति धामं RV. 1,123,9. यदुतस्य धामव्रणयन्त देवाः 4,7,7. यज्ञते अस्य सुखं वयंश्च नमस्विनः स्व सुतस्य धामन् 7,36,5. सुतस्य धामं वि मिमे पुत्राणि 10,124,3. — γ) *यज्ञस्य धाम*. यज्ञस्य धामं प्रथमं मेनत RV. 10,67,2. यज्ञस्य धामं परमम् 181,2. मिमानः प्रति यज्ञस्य धामं VS. 20,37. यज्ञस्य सप्त धामभिः RV. 9,102,2. अग्निं यज्ञिष्ठं सप्त धामभिः 4,7, 5. — e) *Zustand*: ज्ञायत्स्वप्रमुषुतिधामात्रिरुक्ता Prab. 17,15. — f) *Weise, Form; Weise in Lied oder Spruch*: (नामानि) पुरुषुतस्य धामभिः शतेनं मरुयामि RV. 3,37,4. पुरुप्रियो भं देते धामभिः कविः 3,4. प्र मित्रे धाम वरुणे गृणतः 1,152,5. अग्नेर्जिह्वासि सुहृदेवभ्यो धामे धामे मे भव यनुषे यनुषे VS. 1,30. im Opfer नेन्द्रादृते पवते धामं किं चन RV. 9,89, 6. VS. 17,14. — g) *Wirkung, Kraft, Vermögen, facultas; Macht, Majestät*: परमेण धामा देहस्व VS. 1,2. वैश्वानरं तत्र धामान्या चक्रं वेभिः स्वर्चिर्देवः RV. 3,3,10. या ते धामानि परमाणो वाक्मा या मध्यमा विश्वकर्मवृतेमा 10,81,5. समिधा यो निशितो दशदेदेति धामभिरस्य मर्त्यः 8,19,14. इषमश्याम धामं च SV. II,3,2,8,2. उदायुषा स्वायुषोत्पन्नस्य